

# जलवायु संकट से भी मुनाफा कमा रहे दुनिया के सबसे अमीर लोग

## ऑक्सफैम की रिपोर्ट में दावा, 0.1 प्रतिशत अमीरों का कार्बन उत्सर्जन दुनिया के 350 करोड़ गरीबों से अधिक

लंदन। जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं का असर दुनिया भर में बढ़ रहा है। कहीं भीषण गर्मी लोगों की जान ले रही है, तो कहीं बाढ़, सूखा और तूफान खेती, कारोबार और जनजीवन को प्रभावित कर रहे हैं। इस संकट के बीच दुनिया के सबसे अमीर लोगों की भूमिका को लेकर ऑक्सफैम की एक नई रिपोर्ट ने गंभीर सवाल उठाए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, दुनिया के सबसे अमीर 0.1 प्रतिशत लोग, जिनकी संख्या करीब 80 लाख बताई गई है, दुनिया की सबसे गरीब 350 करोड़ आबादी की तुलना में अधिक कार्बन प्रदूषण फैलाते हैं। रिपोर्ट में यह भी दावा किया गया है कि वेहद अमीर लोग जलवायु संकट से जुड़े कारोबार में निवेश करके प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भी मुनाफा कमा रहे हैं।

ऑक्सफैम के अनुसार, अत्यधिक संपन्न लोगों ने आपदाओं से बचाव, राहत, मरम्मत और पुनर्निर्माण से जुड़े कारोबार में बड़े पैमाने पर निवेश किया है। जलवायु परिवर्तन के कारण इन सेवाओं की मांग बढ़ने की संभावना है। अनुमान है कि इस क्षेत्र का सालाना बाजार वर्ष 2029 तक 70 अरब डॉलर से बढ़कर 92 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। इस कारोबार में प्यटर कंडीशनर और कूलिंग उपकरण, बाढ़



से सुरक्षा के इंतजाम, आग बुझाने के उपकरण, परिवहन, खाद्य आपूर्ति, बीमा और कर्ज जैसी सेवाएं शामिल हैं। रिपोर्ट का तर्क है कि जलवायु संकट को बढ़ाने वाले उद्योगों से जुड़े कुछ निवेशक उसी संकट के परिणामों से निपटने वाले कारोबार से भी लाभ हासिल कर सकते हैं।

**भीषण गर्मी में अमीरों के उत्सर्जन की बड़ी भूमिका**

रिपोर्ट में कार्बन उत्सर्जन और भीषण गर्मी की घटनाओं के बीच संबंध को रेखांकित किया गया है। इसके मुताबिक, सबसे अमीर आबादी के किसी एक व्यक्ति का उत्सर्जन सबसे गरीब आबादी के एक व्यक्ति की तुलना में भीषण गर्मी की घटनाओं में करीब 400 गुना अधिक योगदान दे सकता है। यह अंतर बताता है कि जीवनशैली, ऊर्जा की खपत और अत्यधिक प्रदूषण फैलाने वाले साधनों के इस्तेमाल का जलवायु पर कितना बड़ा प्रभाव पड़ सकता है।

ऑक्सफैम के अनुसार, अत्यधिक संपन्न लोगों ने आपदाओं से बचाव, राहत, मरम्मत और पुनर्निर्माण से जुड़े कारोबार में बड़े पैमाने पर निवेश किया है। जलवायु परिवर्तन के कारण इन सेवाओं की मांग बढ़ने की संभावना है। अनुमान है कि इस क्षेत्र का सालाना बाजार वर्ष 2029 तक 70 अरब डॉलर से बढ़कर 92 अरब डॉलर तक पहुंच सकता है। इस कारोबार में प्यटर कंडीशनर और कूलिंग उपकरण, बाढ़ से सुरक्षा के इंतजाम, आग बुझाने के उपकरण, परिवहन, खाद्य आपूर्ति, बीमा और कर्ज जैसी सेवाएं शामिल हैं। रिपोर्ट का तर्क है कि जलवायु संकट को बढ़ाने वाले उद्योगों से जुड़े कुछ निवेशक उसी संकट के परिणामों से निपटने वाले कारोबार से भी लाभ हासिल कर सकते हैं।

रिपोर्ट में 217 ऐसी कंपनियों की पहचान किए जाने का दावा किया गया है, जो एक और जलवायु संकट को बढ़ाने वाले उद्योगों से जुड़ी निजी विमानों के अलावा बड़े घरों में ऊर्जा की अधिक खपत, बार-बार हवाई यात्राएं और कारोबारों की जिम्मेदारी तय करना भी जरूरी है। ऑक्सफैम ने अनुमान बताया है कि वर्ष 2050 तक जलवायु संकट के कारण करीब 100 करोड़ लोगों को विस्थापन का सामना करना पड़ सकता है। यह संख्या दुनिया की अनुमानित आबादी का लगभग 10 प्रतिशत होगी। जलवायु परिवर्तन के चलते समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, अत्यधिक गर्मी, सूखा, बाढ़ और आर्जीविका के साधनों के नष्ट होने जैसी परिस्थितियां लोगों को अपने घर छोड़ने के लिए मजबूर कर सकती हैं। ऐसे विस्थापन का असर खासकर उन समुदायों पर पड़ सकता है, जो खेती, मछली पालन और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं।

रिपोर्ट में 217 ऐसी कंपनियों की पहचान किए जाने का दावा किया गया है, जो एक और जलवायु संकट को बढ़ाने वाले उद्योगों से जुड़ी निजी विमानों के अलावा बड़े घरों में ऊर्जा की अधिक खपत, बार-बार हवाई यात्राएं और कारोबारों की जिम्मेदारी तय करना भी जरूरी है। ऑक्सफैम ने अनुमान बताया है कि वर्ष 2050 तक जलवायु संकट के कारण करीब 100 करोड़ लोगों को विस्थापन का सामना करना पड़ सकता है। यह संख्या दुनिया की अनुमानित आबादी का लगभग 10 प्रतिशत होगी। जलवायु परिवर्तन के चलते समुद्र के जलस्तर में वृद्धि, अत्यधिक गर्मी, सूखा, बाढ़ और आर्जीविका के साधनों के नष्ट होने जैसी परिस्थितियां लोगों को अपने घर छोड़ने के लिए मजबूर कर सकती हैं। ऐसे विस्थापन का असर खासकर उन समुदायों पर पड़ सकता है, जो खेती, मछली पालन और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं।

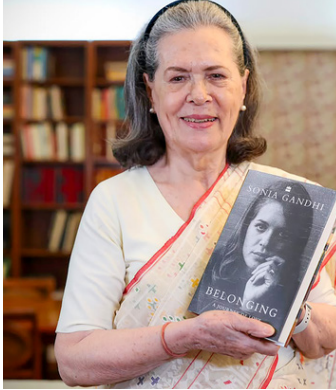
जैसे क्षेत्रों में निवेश आपदाओं से लोगों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। रिपोर्ट की चिंता उन कारोबारों हितों को लेकर है, जिनमें प्रदूषण बढ़ाने वाली गतिविधियों से लाभ और उसी संकट के परिणामों से निपटने वाली सेवाओं से कमाई, दोनों शामिल हो सकते हैं।

**खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ने से भी मिल सकता है लाभ**

प्राकृतिक आपदाओं का असर खाद्य आपूर्ति और कीमतों पर भी पड़ता है। सूखा, बाढ़ या तूफान फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे उत्पादन घट सकता है और बाजार में खाद्य पदार्थों की उपलब्धता प्रभावित हो सकती है। ऐसी परिस्थितियों में कीमतें बढ़ने पर कुछ बड़ी खाद्य व्यापार कंपनियों को अधिक मुनाफा मिल सकता है। ऑक्सफैम की रिपोर्ट इसी पहलू की ओर ध्यान दिलाती है कि जलवायु संकट से होने वाला आर्थिक नुकसान समाज के सभी वर्गों में समान रूप से वितरित नहीं होता। रिपोर्ट में कहा गया है कि अरबपतियों से जुड़ी संपत्ति में वर्ष 2020 के बाद से करीब 120 अरब डॉलर की बढ़ोतरी हुई है। इस अंश के संदर्भ में खाद्य व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े कारोबारों हितों पर सवाल उठाए गए हैं। हालांकि, संपत्ति में हुई पूरी वृद्धि को केवल

## दशकों तक दूसरों ने मेरी कहानी बताई, अब मेरी बारी : सोनिया गांधी

नई दिल्ली। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी अपनी आगामी किताब 'बिलीविंग : अ जर्नी ऑफ लव' के जरिए अपने जीवन के उन पहलुओं को पाठकों के सामने लाने जा रही हैं, जिन्हें लेकर दशकों से चर्चाएं होती रही हैं। मंगलवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर साझा किए गए एक वीडियो में उन्होंने कहा कि लंबे समय से दूसरे लोग उनकी कहानी बताते और लिखते रहे हैं, लेकिन अब अपनी कहानी खुद सुनाने की उनकी बारी है। सोनिया गांधी ने संकेत दिया कि किताब के सामने आने के बाद इस पर चर्चा और कुछ विवाद भी हो सकते हैं। उनके मुताबिक, सार्वजनिक जीवन में किसी व्यक्ति के बारे में अलग-अलग राय बनना स्वाभाविक है और उनकी किताब को लेकर भी ऐसा ही देखने को मिल सकता है।



रिश्तों, अनुभवों और स्मृतियों को साझा करने का एक प्रयास है। उन्होंने अपनी किताब को लेकर कहा कि वह इसे अपना पक्ष रखने के बजाय अपनी कहानी बताने के रूप में देखती हैं। सोनिया गांधी के अनुसार, किताब पढ़ने के बाद कुछ लोगों की उनके प्रति राय बदल सकती है, जबकि कुछ लोग पहले से अधिक प्रकाशन के बाद होने वाली चर्चा को भी वह इसी स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा मानी हैं। उनके बयान से स्पष्ट है कि वह अपने जीवन के अनुभवों को पाठकों के सामने रखने के साथ-साथ उनके मूल्यांकन के लिए भी तैयार हैं।

का भी जिक्र किया। उन्होंने बताया कि दोनों की प्रेम कहानी कैम्ब्रिज के एक छोटे से ग्रीक रेस्तरां में शुरू हुई थी। उस मुलाकात से शुरू हुआ रिश्ता आगे चलकर विवाह और साझा जीवन की लंबी यात्रा में बदल गया। सोनिया गांधी ने अपने और राजीव गांधी के साथ बिताए समय को प्यार, हंसी और यादों से भरी दुनिया के रूप में याद किया। यह निजी प्रसंग उनकी किताब के उन हिस्सों में शामिल है, जिनके जरिए पाठक सोनिया गांधी के सार्वजनिक व्यक्तित्व से इतर उनके परिवारिक और भावनात्मक जीवन को जान सकेंगे। भारतीय राजनीति में लंबे समय तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले गांधी परिवार की कहानी अक्सर राजनीतिक घटनाओं और फैसलों के संदर्भ में चर्चा में रही है। ऐसे में सोनिया गांधी की ओर से अपने रिश्ते और निजी अनुभवों को अपने शब्दों में साझा करना पुस्तक को एक अलग दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है। सोनिया गांधी ने बताया कि वह अपनी किताब के माध्यम से उस दुनिया को पाठकों के साथ साझा करने का प्रयास कर रही हैं, जिसे उन्होंने राजीव गांधी के साथ बनाया था। उनके मुताबिक, यह यात्रा केवल राजनीतिक घटनाओं की कहानी नहीं, बल्कि प्यार, रिश्तों, जीवन के बदलावों और किताब में उनके पूरे विवरण का इंतजार रहेगा। सोनिया गांधी ने एक्स पर साझा किए गए अपने पहले वीडियो में राजीव गांधी के साथ पहली मुलाकात और उनकी प्रेम कहानी की शुरुआत

## पांच राज्यों में चुनाव से पहले अधिकारियों के तबादले का निर्देश

नई दिल्ली। वर्ष 2027 में विधानसभा चुनाव होने वाले पांच राज्यों में निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए चुनाव आयोग ने चुनाव कार्यों से सीधे जुड़े अधिकारियों के तबादले का निर्देश जारी किया है। इस आदेश के दायरे में उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड, गोवा और मणिपुर शामिल हैं। आयोग ने स्पष्ट किया है कि अपने गृह जिले में तैनात अधिकारियों और एक ही जिले में निर्धारित अवधि तक सेवा पूरी कर चुके अधिकारियों को दूसरी जगह तैनात किया जाना चाहिए। इसका उद्देश्य चुनावी प्रक्रिया के दौरान प्रशासनिक निष्पक्षता बनाए रखना और किसी अधिकारी के लंबे समय तक एक ही क्षेत्र में तैनात रहने से पैदा होने वाली संभावित समस्याओं को रोकना है। हाल ही में आयोग ने इन पांच राज्यों सहित 17 राज्यों में मतदाता सूची के विशेष सारांश पुनरीक्षण का निर्देश भी दिया था। आयोग के निर्देश के मुताबिक, अपने गृह जिले में तैनात अधिकारियों के साथ उन अधिकारियों का भी तबादला किया जाना है, जिन्होंने पिछले चार वर्षों के दौरान किसी जिले में तीन साल की सेवा पूरी कर ली है। उत्तर प्रदेश के मामले में 31 मई 2027 तक किसी जिले में तीन साल का कार्यकाल पूरा करने वाले अधिकारी



भी इस व्यवस्था के दायरे में आएंगे। आदेश में जिला निर्वाचन अधिकारी, रिटर्निंग अधिकारी, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट, उप-विभागीय मजिस्ट्रेट, तहसीलदार और खंड विकास अधिकारी सहित जिला स्तर पर चुनाव संबंधी जिम्मेदारियां निभाने वाले अधिकारियों को शामिल किया गया है। इसके अलावा संभागीय आयुक्तों और नगर आयुक्तों पर भी यह निर्देश लागू होगा।

पुलिस विभाग के अधिकारियों को भी इस व्यवस्था के दायरे में रखा गया है। आयोग के निर्देश के अनुसार, उपनिरीक्षक से लेकर रेंज स्तर पर अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक और निरीक्षक से लेकर रेंज स्तर पर अतिरिक्त पुलिस महानिरीक्षक तक के अधिकारियों के तबादले निर्धारित मामलों के अनुरूप किए जाने हैं। इसके साथ ही आबकारी और परिवहन विभाग में उपनिरीक्षक या

उससे ऊपर के रैंक के अधिकारी भी इस निर्देश से प्रभावित होंगे। इन विभागों के अधिकारी कानून-व्यवस्था, निगरानी और प्रवर्तन से जुड़े कार्यों में भूमिका निभाते हैं, इसलिए चुनाव से पहले उनकी तैनाती की समीक्षा को महत्वपूर्ण माना जाता है। हालांकि, आयोग ने कुछ श्रेणियों के अधिकारियों और कर्मचारियों को इस आदेश से छूट भी दी है। राज्य मुख्यालयों में तैनात अधिकारियों पर यह निर्देश लागू नहीं होगा। इसी तरह चुनाव कार्यों से सीधे तौर पर जुड़े नहीं रहने वाले कर्मचारियों, जैसे डॉक्टरों, इंजीनियरों और शिक्षकों को भी इसके दायरे से बाहर रखा गया है। इस व्यवस्था का प्रमुख जोर उन अधिकारियों की तैनाती में बदलाव पर है, जिनकी जिम्मेदारियां चुनाव प्रबंधन, प्रशासनिक निगरानी, कानून-व्यवस्था और निर्वाचन संबंधी कार्यों से सीधे जुड़ी हैं।

पांचों राज्यों में वर्ष 2027 के दौरान विधानसभा चुनाव होने हैं। उत्तर प्रदेश

## कर्नाटक की अंतिम मतदाता सूची जारी, 99.32 लाख नाम घटे

बेंगलुरु। कर्नाटक में विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की प्रक्रिया पूरी होने के बाद मंगलवार को अंतिम मतदाता सूची जारी कर दी गई। मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) कार्यालय के आंकड़ों के मुताबिक, राज्य में अब कुल 4,55,00,011 मतदाता दर्ज हैं। पुनरीक्षण से पहले मतदाताओं की संख्या 5,54,32,314 थी। इस तरह दोनों आंकड़ों के बीच करीब 99.32 लाख मतदाताओं का अंतर सामने आया है। अंतिम सूची जारी होने के साथ ही राज्य में मतदाता सूची के अद्यतन की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण चरण पूरा हो गया है। हालांकि, मतदाताओं की संख्या में आई इस बड़ी कमी को समझने के लिए पुनरीक्षण से पहले और बाद के आंकड़ों के साथ-साथ नाम जोड़ने, हटाने और संशोधन की पूरी प्रक्रिया को देखना जरूरी है।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी कार्यालय के अनुसार, अंतिम मतदाता सूची में 2,25,40,493 पुरुष और 2,29,12,355 महिला मतदाता शामिल हैं। इसके अलावा तीसरे लिंग के 2,841 मतदाताओं के नाम भी दर्ज किए गए हैं। आंकड़ों के मुताबिक, राज्य में महिला मतदाताओं की संख्या पुरुष मतदाताओं से अधिक है। अंतिम सूची में युवा मतदाताओं को भी स्थान मिला है। 18 से 19 वर्ष की आयु के 6.83 लाख से अधिक मतदाता सूची में शामिल हैं। नए और युवा मतदाताओं का पंजीकरण चुनावी प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है। मतदाता सूची के विशेष पुनरीक्षण के दौरान दावे और आपत्तियां दर्ज



साथ-साथ मतदाता सूची में पहले से दर्ज विवरण को दुरुस्त करने की प्रक्रिया भी चली। विशेष गहन पुनरीक्षण का उद्देश्य मतदाता सूची को अद्यतन करना और उसमें दर्ज नामों तथा विवरणों की जांच करना होता है। इस प्रक्रिया में नए पात्र मतदाताओं को शामिल करने, मृत या स्थायी रूप से स्थानांतरित हो चुके लोगों की प्रविष्टियों की समीक्षा करने और दोहरा प्रविष्टियों जैसी समस्याओं को दूर करने पर ध्यान दिया जाता है। कर्नाटक में अंतिम सूची जारी होने के बाद अब मतदाताओं के लिए अपने नाम और व्यक्तिगत विवरण की जांच करना महत्वपूर्ण होगा, ताकि किसी त्रुटि की स्थिति में निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार सुधार कराया जा सके। पुनरीक्षण से पहले और अंतिम सूची के बीच करीब 99.32 लाख मतदाताओं का अंतर सामने आने के बावजूद, इसे केवल हटाए गए नामों की संख्या के बराबर नहीं माना जाना चाहिए। दोनों सूचियों के कुल आंकड़ों में अंतर नए नाम जुड़ने और नाम हटाए जाने, दोनों प्रक्रियाओं के संयुक्त प्रभाव को दर्शाता है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, दावे-आपत्तियों के दौरान 10.08 लाख नए नाम जोड़े गए और 1.88 लाख से अधिक नाम हटाए गए। अंतिम सूची में 4.55 करोड़ से अधिक मतदाताओं का दर्ज होना राज्य की अद्यतन मतदाता सूची की स्थिति को दर्शाता है।

### देश-दुनिया के नवीनतम समाचार प्राप्त करने के लिए आज ही नवसर्जन संस्कृति हिंदी चैनल देखिये



## संपादकीय

## पंजाब को चाहिए

## व्यावहारिक समाधान

यह विडंबना ही है कि जब देश की राजधानी में प्रदूषण की गंभीरता दिखायी देती है तो देश के नीति-निर्णय पराली निस्तारण को लेकर बड़ी-बड़ी बातें करने लगते हैं। अभी कोई अंतिम वैज्ञानिक अध्ययन भी सामने नहीं आया है कि पंजाब या अन्य राज्यों में पराली जलाने की प्रदूषण में कितनी फीसदी भूमिका है। लेकिन एक बात तो तय है कि पराली निस्तारण के जो भी विकल्प दिए जाते हैं, वे समय के अनुरूप किसान की सुविधा या आर्थिकी के अनुरूप नहीं हैं। यदि ये उपाय कारगर होते तो पराली प्रबंधन पर खर्च किए जाने वाले हजारों करोड़ रुपयों पर एक छोटी-सी माफिस भारी न पड़ती। किसान अपने खेतों में पराली को बार-बार यदि आग के हवाले करते हैं तो उसके पीछे का कड़वा सच यह भी है कि धान के अवशेषों को वैज्ञानिक तरीके से नष्ट करने की तुलना में, पराली जला देना उसे सुविधाजनक, सस्ता तात्कालिक निस्तारण का विकल्प नजर आता है। निस्संदेह, जब तक आर्थिक रूप से लाभप्रद विकल्प किसान को नहीं दिया जाता, तब तक केवल सॉफ्टी देने या दंडात्मक कार्रवाई करने के बहुत सीमित परिणाम ही सामने आएंगे। सूत्रों के अनुसार पंजाब में 15 सितंबर से 24 अक्टूबर के बीच खेतों में पराली जलाने की 574 घटनाएं दर्ज की गई हैं। यदि पिछले साल के आंकड़ों से इसकी तुलना करें तो इसी अवधि में 561 घटनाएं ही सामने आई थीं। आंकड़े बताते हैं कि इस साल 270 घटनाएं अकेले तरनतारन में और 144 घटनाएं अमृतसर के इलाके में सामने आई हैं। जो बताती हैं कि इन दोनों इलाकों में विशेष रूप से ध्यान देने और पराली जलाने से रोकने के लिये ठोस कदम उठाने की जरूरत है। उल्लेखनीय है कि पंजाब में अभी भी धान की फसल काटने का मौसम चल रहा है। यहां यह तथ्य उल्लेखनीय है कि इस साल पराली प्रबंधन के लिये 576 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे। इसके अलावा सॉफ्टी वाली लगभग 21,155 मशीनें उपलब्ध कराई गई थीं। दरअसल, सरकारी आर्थिक मदद के बावजूद किसानों को मशीनों को चलाने के खर्च, धान की कटाई और गेहूं की बुवाई के बीच बहुत कम समय समय मिलने और जरूरत के समय मशीनें न मिल पाने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उल्लेखनीय है कि वैज्ञानिक तरीके से पराली प्रबंधन करने में प्रति एकड़ दो हजार से लेकर ढाई हजार रुपये तक खर्च आ सकता है। तभी आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहे किसानों को पराली जलाना सबसे आसान विकल्प लगता है। हालांकि, शासन व प्रशासन ने पराली जलाने से रोकने के लिये सख्ती बढ़ा दी है। सूत्रों के अनुसार अब तक पराली जलाने के मामले में 113 प्राथमिकी दर्ज की गई हैं। इसके अलावा जमीन के रिकॉर्ड में 205 रेड एंटी की गई हैं। साथ ही 11.4 लाख रुपये का पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने का आर्थिक दंड लगाया गया है। निस्संदेह, देश में व्याप्त पर्यावरण संकट के मद्देनजर ऐसी कार्रवाई करना भी जरूरी हो जाता है, क्योंकि खेतों में पराली जलाने से समाज को प्रदूषण के रूप में सेहत के लिये भारी कीमत चुकानी पड़ती है। हालांकि, केवल जुर्माना लगाने से व्यावहारिक विकल्पों की कमी पूरी नहीं हो सकती। साथ ही, साफ हवा बनाने रखने की पूरी कीमत अकेले किसानों को ही नहीं चुकानी चाहिए। दरअसल, प्राथमिकता यह रहे कि फसल अवशेषों का प्रबंधन सस्ता और सहज-सुलभ हो। इसके लिये पराली एकत्र करने और उसे ढोने के लिये जरूरी मशीनों यानी बेक्सेल की कमी को भी दूर किया जाना चाहिए। किसानों को बायोमास पॉवर प्लांट, ईंटर-भट्टों और अन्य उद्योगों से जोड़ने वाले थरोसेमंड बाजार उपलब्ध कराकर, कृषि अवशेषों को एक आर्थिक संसाधन में बदला जा सकता है। इसके साथ ही बिना आग लगाए पराली प्रबंधन करने वाले किसानों को प्रोत्साहन देने पर भी विचार किया जाना चाहिए। सही मायने में सफलता को इस आधार पर मापा जाना चाहिए कि कितने खेतों को बिना जलाये साफ किया गया, न कि इस आधार पर कि कितना पैसा खर्च हुआ। या फिर कितनी मशीनें बांटी गई। इस दिशा में पंजाब में केंद्र सरकार, राज्य सरकार,उद्योगों और किसानों को तालमेल के साथ काम करना चाहिए।

## अभियान

आधुनिकता के इस दौर में जहां समाज की जीवनशैली तेजी से बदल रही है और पुरानी परंपराओं को नए नजरिये से देखा जा रहा है, वहीं उत्तर प्रदेश के मधुपुरी क्षेत्र के सुरीर कला में एक ऐसी मान्यता आज भी चर्चा का विषय बनी हुई है, जो सदियों पुरानी घटना से जुड़ी बताई जाती है। यहां के एक मोहल्ले में कुछ परिवारों की महिलाएं करवाचौथ और अहोई अष्टमी का व्रत नहीं रखती हैं। मान्यता है कि ऐसा करने से सती मैया नाराज हो सकती हैं और परिवार पर विपत्ति आ सकती है। पति की लंबी उम्र और संतान की सलामती के लिए मनाए जाने वाले इन दोनों पर्वों से दूरी बनाए रखने की यह परंपरा स्थानीय लोगों के अनुसार पीढ़ियों से चली आ रही है। इस मान्यता के पीछे एक नवविवाहिता की दर्दनाक कहानी बताई जाती है, जिसने अपने पति की मृत्यु के बाद कथित तौर पर श्राप दिया था और फिर सती हो गई थी। सुरीर में प्रचलित इस परंपरा की जड़े उस घटना से जुड़ी बताई जाती हैं, जिसका उल्लेख स्थानीय बुजुर्ग अपनी स्मृतियों और पीढ़ियों से चली आ रही लोककथा के आधार पर करते हैं। उनके अनुसार, यह घटना कई सौ वर्ष पुरानी है। उस समय आज की तरह सड़क परिवहन के साधन नहीं थे। लोग बैलागाड़ियों और बैसा बगियों से एक स्थान से दूसरे स्थान तक यात्रा करते थे। विवाह के बाद बेटों को समुदाय विदा करना भी परिवारिक और सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण अवसर होता था। इसी तरह नैहडील क्षेत्र के रामनगला

# वह लकीर जिसने मुझे हरियाणवी बनाया

“**वर्ष 2025-26 में, हरियाणा की प्रति व्यक्ति आय लगभग 3.96 लाख रुपये है, जबकि पंजाब की लगभग 2.31 लाख रुपये है। जिस राज्य के बारे में कमी माना जाता था कि वह असफल हो जाएगा, आज उसकी अर्थव्यवस्था उस राज्य से डेढ़ गुना बड़ी है, जिससे उसे अलग करके बनाया गया था।**

## प्रेरणा

इतिहास में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनकी महानता उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उनकी उपलब्धियां आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाती हैं। भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन ऐसे ही असाधारण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपनी विलक्षण गणितीय क्षमता से दुनिया को चकित किया और यह साबित किया कि प्रतिभा किसी विशेष परिस्थिति, महंगी शिक्षा या संसाधनों की प्रचुरता की मोहताज नहीं होती। मन में कुछ नया खोजने की जिज्ञासा और लक्ष्य को प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प हो, तो साधारण परिस्थितियों में जन्म लेने वाला व्यक्ति भी विश्व के इतिहास में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में दर्ज करा सकता है। रामानुजन का जीवन संघर्ष, साधना और आत्मविश्वास की ऐसी कहानी है, जिसमें अपावों के बीच भी सपनों को जीवित रखने का संदेश मिलता है। 22 दिसंबर 1887 को तमिलनाडु के इरोड में जन्मे रामानुजन की रूचि बचपन से ही गणित में थी। संख्याओं के साथ उनका रिश्ता सामान्य विद्यार्थियों से बिल्कुल अलग था। वे गणितीय समस्याओं को केवल पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं मानते थे, बल्कि उनके भीतर छिपे सिद्धांतों को समझने और नए निष्कर्ष निकालने में गहरी रुचि रखते थे। उनकी प्रतिभा इतनी असाधारण थी कि सीमित साधनों के बावजूद उन्होंने गणित के ऐसे क्षेत्रों में काम किया, जिन पर दुनिया के प्रतिष्ठित विद्वान भी शोध कर रहे थे।

उनके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने परिस्थितियों को अपनी प्रतिभा के विकास में बाधा नहीं बनने दिया। आर्थिक कठिनाइयों और शैक्षणिक चुनौतियों के बावजूद वे लगातार गणितीय प्रश्नों पर काम करते रहे। उनकी खोजों ने अंततः इंग्लैंड के प्रसिद्ध गणितज्ञ जी.एच. हार्डी का ध्यान आकर्षित किया। हार्डी ने उनकी क्षमता को पहचाना और उन्हें कैब्रिज विश्वविद्यालय में शोध करने का अवसर मिला। यह अवसर रामानुजन के लिए अपने महत्त्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करने का विचारपूर्ण माध्यम बना। इंग्लैंड पहुंचने के बाद रामानुजन को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। भारत की जलवायु से अलग वहां का ठंडा मौसम, खानपान में अंतर और स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां उनके लिए चुनौतीपूर्ण थीं। इसके बावजूद उन्होंने गणित के प्रति अपना समर्पण बनाए रखा। उनके लिए ज्ञान की खोज केवल व्यक्तिगत सफलता का रास्ता नहीं थी, बल्कि अपनी क्षमता को सिद्ध करने का माध्यम भी थी। उन्होंने अपने कार्यों से दिखाया कि किसी व्यक्ति की असली पहचान उसके पद, प्रतिष्ठा या सुविधाओं से नहीं, बल्कि उसकी मौलिक सोच और योगदान से बनती है। रामानुजन से जुड़ा एक प्रेरक प्रसंग उनके आत्मसम्मान को रक्षाकृत करता है। इस कथा में बताया जाता है कि कैब्रिज में शोध के दौरान एक दिन प्रोफेसर हार्डी ने उन्हें पुराने कागज पर कोयले के टुकड़ों से गणितीय सूत्र लिखते देखा। विश्वविद्यालय से उपलब्ध कसपे गए अच्छे कागज और स्याही का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा था। हार्डी ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा कि जब उन्हें शोध के लिए बेहतर सामग्री मिली हुई है, तो वे साधारण साधनों का उपयोग क्यों कर रहे हैं।

मैं तीन साल का था, जब भारत के नक्शे पर एक नई, टेढ़ी-मेढ़ी लकीर खींची गई। तीन साल, दो महीने और एक दिन—ठीक वैसे ही जैसे बच्चे अपनी उम्र गिनते हैं, यह जानते हुए कि हम बड़े होकर भूल जाते हैं कि हर एक दिन मायने रखता है। और उस दिन ने सच में मायने रखा। 1 नवंबर 1966 को, मेरे माता-पिता ने खुशी-खुशी मुझे बताया कि अब हम हरियाणवा हैं। मैंने इसे ऐसे लिया जैसे कोई बच्चा एक तोहफ़ा पाकर करता है। बहुत बाद में मुझे समझ आया—इसे बनाने में मेरे माता-पिता ने यह कारक अपना योगदान दिया। हरियाणा दिवस और पंजाब दिवस एक ही तरीख़ को आते हैं, जैसे अलग-अलग घघरों में पले-बढ़े जुड़वां बच्चे। हर हरियाणवी पंजाब की खबरे ऐसे पढ़ता है जैसे कोई अपने बड़े भाई की खबरे पढ़ रहा हो—जन्मजात स्नेह के साथ, थोड़ी-सी टीस के साथ और मन ही मन महसूस होने वाले थोड़े से गर्व के साथ-हा। गर्व, क्योंकि किसी को उम्मीद नहीं थी कि छोटा भाई (हरियाणा) अपने पैरों पर खड़ा हो पाएगा। हरियाणा उस समय एक शुष्क और धूल भरा इलाका था—जिसे कमतर माना जाता था, जहां न के बराबर उद्योग-धंधे, सड़कें थीं और नहरें भी नहीं थीं, और न ही पैसा था। कहा गया था कि कुछ ही सालों में यह राज्य असफल होकर रह जाएगा, कर्मचारियों को वेतन तक नहीं दे पाएगा। यह लकीर 1961 की जनगणना आधारित थी। इसी जनगणना के आंकड़ों से यह तय होना था कि पूर्वी पंजाब के मैदानी इलाकों में हर गांव और शहर का भविष्य का क्या होगा। जब जनगणना करने वाले अधिकारी आए तो मेरे माता-पिता—जो कि पश्चिमी पंजाब से आकर यहां बसे थे—ने अपनी मातृभाषा ‘हिंदी’ बताई। यह प्यार से बोला गया झूठ था, एक ऐसे राज्य के लिए दिया गया वोट, जिसका उस समय कोई अस्तित्व ही नहीं था।

जब हरियाणा बना, तब मैंने अंबाला शहर के एक प्रजापेट स्कूल में पढ़ाई शुरू की थी, जहां हर कोई पंजाबी बोलता था। कुछ ही समय बाद, हिंदी में किताबें आ गईं—एक ऐसी भाषा जिसे मेरे शिक्षकों

शैक्षणिक चुनौतियों के बावजूद वे लगातार गणितीय प्रश्नों पर काम करते रहे। उनकी खोजों ने अंततः इंग्लैंड के प्रसिद्ध गणितज्ञ जी.एच. हार्डी का ध्यान आकर्षित किया। हार्डी ने उनकी क्षमता को पहचाना और उन्हें कैब्रिज विश्वविद्यालय में शोध करने का अवसर मिला। यह अवसर रामानुजन के लिए अपने महत्त्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करने का विचारपूर्ण माध्यम बना।

इंग्लैंड पहुंचने के बाद रामानुजन को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। भारत की जलवायु से अलग वहां का ठंडा मौसम, खानपान में अंतर और स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां उनके लिए चुनौतीपूर्ण थीं। इसके बावजूद उन्होंने गणित के प्रति अपना समर्पण बनाए रखा। उनके लिए ज्ञान की खोज केवल व्यक्तिगत सफलता का रास्ता नहीं थी, बल्कि अपनी क्षमता को सिद्ध करने का माध्यम भी थी। उन्होंने अपने कार्यों से दिखाया कि किसी व्यक्ति की असली पहचान उसके पद, प्रतिष्ठा या सुविधाओं से नहीं, बल्कि उसकी मौलिक सोच और योगदान से बनती है। रामानुजन से जुड़ा एक प्रेरक प्रसंग उनके आत्मसम्मान को रक्षाकृत करता है। इस कथा में बताया जाता है कि कैब्रिज में शोध के दौरान एक दिन प्रोफेसर हार्डी ने उन्हें पुराने कागज पर कोयले के टुकड़ों से गणितीय सूत्र लिखते देखा। विश्वविद्यालय से उपलब्ध कसपे गए अच्छे कागज और स्याही का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा था। हार्डी ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा कि जब उन्हें शोध के लिए बेहतर सामग्री मिली हुई है, तो वे साधारण साधनों का उपयोग क्यों कर रहे हैं।

## नवसर्जन संस्कृति

शैक्षणिक चुनौतियों के बावजूद वे लगातार गणितीय प्रश्नों पर काम करते रहे। उनकी खोजों ने अंततः इंग्लैंड के प्रसिद्ध गणितज्ञ जी.एच. हार्डी का ध्यान आकर्षित किया। हार्डी ने उनकी क्षमता को पहचाना और उन्हें कैब्रिज विश्वविद्यालय में शोध करने का अवसर मिला। यह अवसर रामानुजन के लिए अपने महत्त्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करने का विचारपूर्ण माध्यम बना।

इंग्लैंड पहुंचने के बाद रामानुजन को कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। भारत की जलवायु से अलग वहां का ठंडा मौसम, खानपान में अंतर और स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां उनके लिए चुनौतीपूर्ण थीं। इसके बावजूद उन्होंने गणित के प्रति अपना समर्पण बनाए रखा। उनके लिए ज्ञान की खोज केवल व्यक्तिगत सफलता का रास्ता नहीं थी, बल्कि अपनी क्षमता को सिद्ध करने का माध्यम भी थी। उन्होंने अपने कार्यों से दिखाया कि किसी व्यक्ति की असली पहचान उसके पद, प्रतिष्ठा या सुविधाओं से नहीं, बल्कि उसकी मौलिक सोच और योगदान से बनती है। रामानुजन से जुड़ा एक प्रेरक प्रसंग उनके आत्मसम्मान को रक्षाकृत करता है। इस कथा में बताया जाता है कि कैब्रिज में शोध के दौरान एक दिन प्रोफेसर हार्डी ने उन्हें पुराने कागज पर कोयले के टुकड़ों से गणितीय सूत्र लिखते देखा। विश्वविद्यालय से उपलब्ध कसपे गए अच्छे कागज और स्याही का इस्तेमाल नहीं किया जा रहा था। हार्डी ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा कि जब उन्हें शोध के लिए बेहतर सामग्री मिली हुई है, तो वे साधारण साधनों का उपयोग क्यों कर रहे हैं।

और मैंने एक साथ मिलकर सीखा। बाद में, कॉलेज में पढ़ाई का माध्यम अंग्रेजी हो गया। कई सालों तक, किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए मुझे दिमाग में तीन कदम उठाने पड़ते थे—पहले पंजाबी में सोचना, उसका हिंदी में अनुवाद, और अंत में अंग्रेजी में लिखना। और फिर भी, परीक्षा के लिए समय सिर्फ तीन घंटे ही मिलता था। इस बीच, मेरे पिता अपना उर्दू दैनिक अखबार ‘हिंद समाचार’ पढ़ते रहे, सेना में बतौर सैनिक भर्ती होकर वे तरक्की पाकर नायब सुबेदार के पद तक पहुंचे थे। मेरी मां अपने दो बेटों की परवरिश के दौरान संस्कृत के ग्रंथों का पाठ करती थीं। इस तरह, मैं चार लिपियों और पांच भाषाओं—और उनके साहित्य—के बीच पला-बढ़ा।

कोई बहन न होने के कारण, मैं अपनी मां के रोजमर्रा के कामों में हाथ बंटाने लगा और वहीं से मैंने एक बहुत ही कीमती गुण सीखा—कोमलता। हम लोग गरीब थे, और उस समय हरियाणा की गरीब था। मार्च 1977 में, जब मैं 13 साल का था और अभी मैट्रिक भी पास नहीं की थी, मैंने अपने ही हाई स्कूल के प्राइमरी सेक्शन में तीन महीने तक गणित पढ़ाया। इसके लिए मुझे हर महीने 250 रुपये मिलते थे। यह उस पूरी स्थिति का एक छोटा-

इस प्रसंग में रामानुजन का दुष्टिकोण यह संदेश देता है कि किसी विचार की महानता उसके प्रस्तुत करने के साधनों से तय नहीं होती। असली महत्व उस ज्ञान का है, जो मानवता के लिए नई संभावनाएं खोलता है। हालांकि कोयले और पुराने कागज से जुड़े इस संवाद की ऐतिहासिक पुष्टि उपलब्ध नहीं है, इसलिए इसे प्रामाणिक घटना के बजाय एक प्रेरक कथा के रूप में ही देखा चाहिए। रामानुजन का वास्तविक जीवन भी इस बात का उदाहरण है कि सीमित साधनों में विकसित हुई प्रतिभा असाधारण ऊंचाईयों तक पहुंच सकती है। उनकी उपलब्धियों का महत्व उस दौर में और बढ़ जाता है, जब भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। ऐसे समय में एक भारतीय विद्वान का विश्व के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों में अपनी पहचान स्थापित करना भारतीय प्रतिभा की क्षमता का महत्वपूर्ण प्रमाण था। रामानुजन ने अपनी खोजों के माध्यम से किसी राजनीतिक भाषण के बिना ही भारत का गौरव बढ़ाया। उनका काम यह साबित के लिए पर्याप्त था कि ज्ञान और बुद्धिमत्ता किसी देश या समाज की सीमाओं में बंधे नहीं होते। राष्ट्रप्रेम का अर्थ केवल देश के प्रति भावनाएं व्यक्त करना नहीं है। अपने कार्य में उत्कृष्टता प्राप्त करना, समाज को नई दिशा देना और अपनी उपलब्धियों से देश की प्रतिष्ठा बढ़ाना भी राष्ट्रप्रेमा का महत्वपूर्ण रूप है। रामानुजन ने गणित को अपना माध्यम बनाया और अपने योगदान से विश्वभर के विद्वानों को प्रभावित किया। उनकी खोजों का प्रभाव आज भी गणित के विभिन्न क्षेत्रों में देखा जात है। उनके विचारों पर आधारित शोध लगातार आगे बढ़ जा रहा है,

जो उनकी प्रतिभा की गहराई को दर्शाता है।

26 अप्रैल 1920 को मात्र 32 वर्ष की आयु में रामानुजन का निधन हो गया। उनका जीवन भले ही छोटा रहा, लेकिन उनकी बौद्धिक विरासत बहुत व्यापक है। भारत में उनके जन्मदिन 22 दिसंबर को राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह सम्मान देश के उन प्रतिभा को याद करने का अवसर है, जिसने कठिन परिस्थितियों के बावजूद विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाई। आज के युवाओं के लिए रामानुजन का जीवन एक महत्वपूर्ण सीख प्रस्तुत करता है। सफलता के लिए संसाधनों का होना लाभदायक है, लेकिन उससे भी अधिक जरूरी है अपनी क्षमताओं पर विश्वास, सीखने की ललक और निरंतर प्रयास करने की आदत। दूसरों के पास उपलब्ध सुविधाओं को देखकर निराश होने के बजाय अपनी प्रतिभा की निखारने पर ध्यान देना चाहिए। कठिनाइयां व्यक्ति के गति धीमी कर सकती हैं, लेकिन दृढ़ इच्छाशक्ति उसे अपने लक्ष्य से विमुख होने से बचा सकती है। रामानुजन की विरासत हमें सिखाती है कि महानता का निर्माण बारीक चमक से नहीं, बल्कि भीतर की साधना से होता है। जब व्यक्ति अपने ज्ञान को समाज के हित में लगाता है और अपने कर्मों से देश को अपने लक्ष्य से विमुख होने से बचा सकती है। रामानुजन की विरासत हमें सिखाती है कि महानता का निर्माण बारीक चमक से नहीं, बल्कि भीतर की साधना से होता है। जब व्यक्ति अपने ज्ञान को समाज के हित में लगाता है और अपने कर्मों से देश को अपने लक्ष्य से विमुख होने से बचा सकती है। रामानुजन की विरासत हमें सिखाती है कि महानता का निर्माण बारीक चमक से नहीं, बल्कि भीतर की साधना से होता है। जब व्यक्ति अपने ज्ञान को समाज के हित में लगाता है और अपने कर्मों से देश को अपने लक्ष्य से विमुख होने से बचा सकती है।

परिवारों में परंपरा का पालन आज भी महत्वपूर्ण माना जाता है। इस कहानी का एक दूसरा पहलू रामनगला गांव से भी जुड़ा बताया जाता है। स्थानीय जनश्रुति के अनुसार, वहां के ब्राह्मण समाज के कुछ लोग आज भी सुरीर में भोजन करना तो दूर, पानी पीने से भी परहेज करते हैं। इसके पीछे सदियों पहले हुई उस कथित घटना को कारण बताया जाता है, जिसमें रामनगला के युवक की मृत्यु हो गई थी। कुछ परिवार सुरीर के उन लोगों को उस घटना के लिए जिम्मेदार मानते हैं। इस तरह एक पुरानी घटना की स्मृति दो अलग-अलग स्थानों के कुछ परिवारों के व्यवहार और मान्यताओं में लंबे समय तक बनी रहने की बात सामने आती है। हालांकि इस परंपरा का पालन आज किन्ने परिवार करते हैं और इसका वर्तमान स्वरूप क्या है, इसकी स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक है। सुरीर की यह मान्यता समय में परंपरा, आस्था और बदलते समय के बीच संबंधों पर भी सवाल खड़े करती है। एक और लोग अपनी सांस्कृतिक विरासत और पूर्वजों की मान्यताओं को सम्मान चला चाहते हैं। तो दूसरी ओर आधुनिक समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और तार्किक दृष्टिकोण की भी महत्व दिया जा रहा है। किसी धार्मिक परंपरा को मानना या न मानना व्यक्तिगत और परिवारिक आस्था का विषय हो सकता है, लेकिन भय के कारण किसी पर्व से दूरी बनाए रखने की स्थिति पर संवेदनशीलता से विचार करना भी जरूरी है।

किया जाता है। ऐसा ही एक विचार 1994 में आया—“अपनी बेटो, अपना धन”—जिसके तहत हर नवजात बच्ची के नाम पर सरकार की ओर से एक छोटा बचत निवेश किया जाए। इस विचार की जड़ मेरी इकलौती बहन से जुड़ी थी, जो मुझसे पहले पैदा हुई थी, लेकिन कुछ महीनों से ज्यदा जीवित नहीं रह सकी। भाग्यशाली रहा कि मुझे बंसीलाल और ओम प्रकाश चौटाला के कार्यकाल में ‘निदेशक जनसंपर्क’ के रूप में काम करने का मौका मिला। आगे चलकर, मैं ओम प्रकाश चौटाला, मनोहर लाल और नायब सिंह सैनी के कार्यालयों में और भी गहराई से जुड़ा रहा। उन वर्षों ने मुझे एक बहुत महत्वपूर्ण सबक सिखाया—“सीज़र की पत्नी” वाला सिद्धांत : सरकार के फैसले न केवल लोगों के लिए अच्छे होने चाहिए, बल्कि वे अच्छे दिखने में चाहिए। फरीदाबाद और गुरुग्राम (तब गुडगांव) नगर निगमों में बतौर कमिश्नर बिताए चार सालों ने मुझे चीजों को उच्चस्तर पर देखने में और जमीनी हकीकत के बीच रहने वाले अंतरों को बहुत करीब से दिखाया। वर्ष 2025-26 में, हरियाणा की प्रति व्यक्ति आय लगभग 3.96 लाख रुपये है, जबकि पंजाब की लगभग 2.31 लाख रुपये है। जिस राज्य के बारे में कभी माना जाता था कि वह असफल हो जाएगा, आज उसकी अर्थव्यवस्था उस राज्य से डेढ़ गुना बड़ी है, जिससे उसे अलग करके बनाया गया था। मैं यह बात किसी घमंड के साथ नहीं कह रहा हूं। देश का पेट भरने और उसकी रक्षा करने के लिए पंजाब ने अपनी मिट्टी, अपने पानी और एक काले दशक की कीमत चुकाई—जबकि हरियाणा इन सब चीजों से काफी हद तक बचा रहा। जब पंजाब लड़खड़ाए, तो हरियाणा को उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाना चाहिए, न कि उसके सामने तुलना करने वाला चार्ट रखना। मुझे राज्य की कमियां को भी अवश्य ही आईना दिखाना होगा। हमारा लिंगानुपात इतना खराब था कि 2015 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राष्ट्रीय ‘बेटी

बचाओ, बेटी पढ़ाओ’ अभियान की शुरुआत के लिए पानीत को चुना। सुधार के बावजूद यह अभी भी काफी कम है। हमारा भूजल और हवा की गुणवत्ता खराब हो रही है। पैसा आने पर जरूरी नहीं कोई समझदार भी बन जाए। मुझे ज्यदा चिंता युवाओं के भविष्य को लेकर है। हरियाणा से भारत को अपने भौगोलिक आकार के कहीं ज्यदा खिलाड़ी और सैनिक मिलते हैं। फिर भी, कुछ युवा आपराधिक गिरोहों और नशों की ओर भटक रहे हैं। यह निराशा पुरानी है। 18 साल की उम्र में, मैंने फॉरेस्ट रेंजर के पद के लिए लिखित परीक्षा तो पास कर ली थी, लेकिन इंटरव्यू में मुझे खारिज कर दिया गया और सलाह दी गई कि मैं ‘इंडियन फॉरेस्ट सर्विस’ के लिए कोशिश करूं। तीन दशकों तक, हरियाणा के बहुत कम युवाओं को यह भरोसा था कि बिना किसी ‘जान-पहचान’ या ‘सिफारिश’ के सरकारी नौकरी मिल सकती है। सुखद है कि 2015 से योग्यता के आधार पर हो रही भर्तियों ने लोगों का यह भरोसा फिर से बहाल किया है। तो, अपने राज्य के स्थापना दिवस पर मैं उसके लिए क्या कामना करता हूं? यही कि वह हमेशा कुछ नया करने के लिए बेचैन रहे। वह अपने युवाओं की देखभाल उतनी ही सावधानी से करना सीखे, जैसे वामन पुराण में कुरु ने कुरुक्षेत्र के खेतों की देखभाल की थी। उन्हें मन और दिल की स्थिरता की जरूरत है। मुझे उम्मीद है कि हम ‘प्राण’ नामक नए फाउंडेशन के जरिए इस दिशा में काम कर सकेंगे, जिसकी शुरुआत हम छात्रों के साथ करेंगे। यह फिर से मेरा पहला सफल होम। शिक्षक और विद्यार्थी, दोनों मिलकर एक नई भाषा सीखेंगे।

1 नवंबर को, जब हरियाणा अपनी डायमंड जुबली मनाएगा, तब मैं 63 साल, दो महीने और एक दिन का हो जाऊंगा। जनगणना फॉर्म पर मेरे माता-पिता ने मेरी पहचान यह थी। तब से लेकर आज तक, कक्षा से लेकर विषय बीके के बोर्ड तक—मैंने हर दिन खुद ही अपनी यह पहचान चुनी है। नक्शे पर खींची गई वह लकीर अब घर बन गई है। बात नहीं थी। ये भी ध्यान रखना चाहिए कि- जनजातीय समाज से आने वाली बेटें ‘द्रौपदी मुर्मु’ को भाजपा ने सर्वोच्च पद राष्ट्रपति की आसदी तक पहुंचाया है। जबकि कांग्रेस नेतृत्व वाले इंडी गठबंधन ने- जनजातीय समाज की इसी बेटी के खिलाफ अपना उम्मीदवार उतारा था। जो किसी भी स्थिति में जनजातीय समाज से आने वाली बेटों को राष्ट्रपति नहीं बनने देना चाहते थे। भला, कांग्रेस और इंडी गठबंधन को जनजातीय समाज के विरोध में आने से क्या हासिल हुआ? क्या ये कॉलेनियल माइंडसेट नहीं था, जो जनजातीय समाज को कभी भी वो लकीर है, जो राष्ट्र की आंतरिक सुरक्षा और समृद्धि की संघर्षमय-प्रतिबद्धता के कहानी कहती है। 2024 में जब केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ये ऐलान किया था। ‘उस समय लोग विश्वास नहीं करते थे। विरोध के लिए विरोध करने वाले’ धड़े, उपहास के उड़ा रहे थे। किन्तु जब तय समय सीमा के देश से माओवादी आ-तंक ( नक्सलवाद) समाप्त हो गया तो विरोध करने वाले उपहास का पात्र बनकर रह गए। हालांकि ‘अर्बन नक्सली’ और उन्हीं के र-क्तबीज ‘दिमागी नक्सली’ आज भी बस्तर में आंध्र गार्डिया के बेटे हैं। किन्तु वो अब कभी भी सफल नहीं हो पाएंगे। क्योंकि पूरा समाज जाग चुका है।स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार 23 अक्टूबर 2026 को बस्तर में राष्ट्रपति का राष्ट्रपति का साक्षात्कार होना। हमारी सांस्कृतिक अन्तरचेचना का प्रतिबिम्ब है। ये कोई सामान्य बात नहीं है। यह उस संकल्प की परिणति है। जो संकल्प—बस्तर की खुशहाली के लिए प्रतिबद्ध है। बस्तर में यही लोकतन्त्र का उदय है। जहां अब लोग नियंत्र होकर जीवन जी रहे हैं। राष्ट्रप्रमुख उनके बीच पहुंच कर रहे हैं। जबकि इसके पहले ‘अर्बन नक्सलियों’ की कमांड से भी संचालित होने वाले सशस्त्र माओवादी — सेना हिं-सा, रक्त’-पात का वीरस खेल, रचते थे। ‘जनताल’-सरकार के नाम पर भारत के लोकतन्त्र और संविधान को चुनौती देते थे। इन्हें किन्नाह और पूर्ववर्ती सरकार का घोषित-अघोषित समर्थन प्राप्त था? क्या ये किसी से छिपा है? लेकिन अब नक्सली नेस्तनाबूद हो चुके हैं। जिन माओवादियों ने सरेइर किया है। उनके पुनर्वास के कार्यक्रम चल रहे हैं। उनको कोशल सम्पन्न बनाया जा रहा है। मुख्य धारा से जोड़ा जा रहा है। ये बस्तर में बारूद की गंध नहीं है। अब बस्तर में प्रकृति, संस्कृति, परिवर्तन और विकास का विरासत को एक साथ लेकर चलने के लिए संकल्पबद्ध है। अगर सोचिए कि —अगर केंद्र और राज्य में भाजपा सरकार नहीं होती तो क्या देश से माओवादी आ-तंक समाप्त हो पाता ? क्या धारा-370 खत्म हो पाती?



# झारखंड में अफीम की खेती, लखनऊ में हेरोइन तैयार कर दिल्ली-एनसीआर में सप्लाई

नई दिल्ली। झारखंड के जंगलों और पहाड़ियों में अफीम की खेती से लेकर उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में हेरोइन तैयार करने और फिर दिल्ली-एनसीआर में उसकी सप्लाई करने वाले कथित नशा तस्करी नेटवर्क का दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने खुलासा किया है। पुलिस के मुताबिक, इस नेटवर्क में शामिल लोग कथित तौर पर सरकारी जमीन पर अफीम उगाते थे। फसल तैयार होने के बाद कच्चा माल लखनऊ पहुंचाया जाता था, जहां उसे प्रसंस्कृत कर हेरोइन तैयार की जाती थी। इसके बाद अलग-अलग लोगों और छोटे नेटवर्क के माध्यम से नशीले पदार्थ की खेप दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र तक पहुंचाई जाती थी। मामले में पुलिस ने झारखंड के चतरा निवासी प्रकाश कुमार को गिरफ्तार किया है। उसकी निशानदेही और पूछताछ के आधार पर पुलिस ने नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों के खिलाफ भी कार्रवाई की है।

पुलिस के अनुसार, प्रकाश कुमार झारखंड के चतरा जिले का रहने वाला है। पूछताछ में उसने कथित तौर पर बताया कि वह झारखंड के जंगलों और पहाड़ी क्षेत्रों में अफीम की

खेती करता था। फसल तैयार होने के बाद उससे प्राप्त कच्चा माल लखनऊ भेजा जाता था, जहां उसे प्रसंस्कृत कर हेरोइन बनाई जाती थी। इसके बाद तैयार नशीले पदार्थ को दिल्ली-एनसीआर तक पहुंचाने के लिए अलग-अलग लोगों की मदद ली जाती थी। पुलिस अब इस बात की जांच कर रही है कि नेटवर्क में कौन-कौन लोग शामिल थे, उनकी जिम्मेदारियां क्या थीं और नशीले पदार्थ की आपूर्ति किन-किन स्थानों तक की जाती थी। जांच में सामने आए विवरण के मुताबिक, कथित तस्करी नेटवर्क का संचालन कई चरणों में किया जाता था। अफीम की खेती, कच्चे माल की दुलाई, लखनऊ में प्रसंस्करण और तैयार हेरोइन की सप्लाई के लिए अलग-अलग लोगों को जिम्मेदारी दी गई थी। पुलिस का कहना है कि नेटवर्क से जुड़े लोग अपनी गतिविधियों को छिपाने के लिए छोटे-छोटे समूहों के माध्यम से काम करते थे। कच्चे माल और तैयार नशीले पदार्थ को सीधे एक ही रास्ते से भेजने के बजाय अलग-अलग माध्यमों से आगे पहुंचाया जाता था, ताकि पूरे नेटवर्क की



कड़ियों का पता लगाना मुश्किल हो। पुलिस के अनुसार, सरकारी जमीन पर अफीम की खेती करने का कथित उद्देश्य भी अपनी पहचान और गतिविधियों को छिपाना था। पुलिस की जांच में यह भी सामने आया है कि तैयार हेरोइन की सप्लाई दिल्ली-

एनसीआर में की जाती थी। अधिकारियों के मुताबिक, इस नेटवर्क की आपूर्ति व्यवस्था की पड़ताल की जा रही है। पुलिस ने आशंका जताई है कि नशीले पदार्थ की खपत बढ़ाने के लिए अलग-अलग संपर्कों के जरिए इसे विभिन्न स्थानों तक पहुंचाया

जाता था। शुरुआती जानकारी में स्कूलों, कॉलेजों और होटलों तक सप्लाई किए जाने का दावा भी सामने आया है। हालांकि, इन स्थानों से जुड़े कथित नेटवर्क और सप्लाई की सीमा के बारे में विस्तृत जानकारी जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी।

## सैंसेक्स–निफ्टी सपाट बंद, निवेशकों की संपत्ति में 3.33 लाख करोड़ का इजाफा

नई दिल्ली। घरेलू शेयर बाजार में मंगलवार को निफ्टी और बैंक निफ्टी की मासिक एक्सपायरी के बीच पूरे दिन उतार-चढ़ाव का दौर जारी रहा। कारोबार की शुरुआत कमजोर रही, लेकिन शुरुआती गिरावट के बाद खरीदारी लौटने से सेंसेक्स और निफ्टी हरे निशान में पहुंच गए। हालांकि, दूसरे कारोबारी सत्र में बिकवाली बढ़ने से बाजार पर दोबारा दबाव बना। कारोबार के अंतिम घंटे में निवेशकों ने चुनिंदा शेयरों में खरीदारी की, जिससे दोनों प्रमुख सूचकांक दिन की गिरावट से उबरने में सफल रहे। इसके बावजूद सेंसेक्स और निफ्टी मामूली नुकसान के साथ लगभग सपाट स्तर पर बंद हुए। प्रमुख सूचकांकों में भले ही बड़ी तेजी नहीं दिखी, लेकिन व्यापक बाजार में जोरदार खरीदारी के चलते निवेशकों की संपत्ति में एक ही कारोबारी सत्र के दौरान 3.33 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी दर्ज की गई।

बैंचेंसे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 8.08 अंक यानी 0.01 प्रतिशत की मामूली गिरावट के साथ 73,598.67 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी भी मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ। निफ्टी 3.45 अंक यानी 0.02 प्रतिशत टूटकर 22,749.75 अंक पर आ गया। कारोबार की शुरुआत में सूचकांक 22,708.80 अंक पर कमजोर रुख के साथ खुला था। इसके बाद बाजार में खरीदारी बढ़ने से निफ्टी 22,829.75 अंक के उच्चतम स्तर तक पहुंच गया। हालांकि, दूसरे सत्र में बिकवाली का दबाव

कारोबार के दौरान सूचकांक में काफी उतार-चढ़ाव देखने को मिला। सेंसेक्स दिन के निचले स्तर 73,179.41 अंक तक फिसल गया था, जबकि खरीदारी के समर्थन से इसने 73,762.98 अंक का उच्चतम स्तर भी छुआ। इस प्रकार दिन के उच्चतम स्तर से इसमें 583 अंक से अधिक की गिरावट दर्ज की गई। बाजार में कभी खरीदारी तो कभी बिकवाली हावी रहने के कारण निवेशकों को पूरे सत्र के दौरान दिशा का स्पष्ट संकेत नहीं मिला। आखिरी घंटे में कुछ चुनिंदा शेयरों में लिवाली से बाजार को सहारा मिला, लेकिन सेंसेक्स को बढ़त के साथ बंद होने में सफलता नहीं मिली। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी भी मामूली गिरावट के साथ बंद हुआ। निफ्टी 3.45 अंक यानी 0.02 प्रतिशत टूटकर 22,749.75 अंक पर आ गया। कारोबार की शुरुआत में सूचकांक 22,708.80 अंक पर कमजोर रुख के साथ खुला था। इसके बाद बाजार में खरीदारी बढ़ने से निफ्टी 22,829.75 अंक के उच्चतम स्तर तक पहुंच गया। हालांकि, दूसरे सत्र में बिकवाली का दबाव

मामले की जांच के दौरान पुलिस को कथित नेटवर्क के नक्सलियों से संबंध होने के संकेत भी मिले हैं। पुलिस को आशंका है कि नशा तस्करी से होने वाली कमाई का एक हिस्सा नक्सलियों तक पहुंचाया जाता था। जांच एजेंसियों के अनुसार, यका मकम कथित तौर पर उन्हें आश्रय और भोजन जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए दी जाती थी। हालांकि, इन संबंधों और धन के कथित लेनदेन की पुष्टि के लिए पुलिस आगे की जांच कर रही है। इस पहलू के सामने आने के बाद जांच का दायरा केवल नशीले पदार्थों की बरामदगी और तस्करी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि कथित वित्तीय नेटवर्क और अन्य संपर्कों की पड़ताल भी महत्वपूर्ण हो गई है।

पुलिस के मुताबिक, इस नेटवर्क का खुलासा एक अन्य आरोपी की गिरफ्तारी के बाद शुरू हुई जांच से हुआ। बेगमपुर निवासी लक्ष्मण हड्डू को पहले गिरफ्तार किया गया था। उसके पास से 300 ग्राम हेरोइन और तीन लाख रुपये नकद बरामद किए गए थे। पुलिस ने उससे पूछताछ की तो जांच की कड़ियां उत्तर प्रदेश तक पहुंचीं। इसके

बढ़ने से यह गिरकर 22,636.85 अंक के निचले स्तर तक आ गया। अंतिम घंटे में खरीदारी लौटने से निफ्टी ने निचले स्तरों से कुछ सुधार किया और लगभग सपाट स्थिति में कारोबार समाप्त किया। मासिक एक्सपायरी के कारण बाजार में सौदों के संभ्रमण और निवेशकों की सतर्कता ने भी उतार-चढ़ाव को बढ़ाए रखा। प्रमुख सूचकांकों में मामूली गिरावट के बावजूद व्यापक बाजार की तत्वीर काफी मजबूत रही। बीएसई में सूचीबद्ध कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण बढ़कर 4,59,79,056.94 करोड़ रुपये पर पहुंच गया, जबकि पिछले कारोबारी सत्र यानी सोमवार को वह 4,56,45,635.93 करोड़ रुपये था। इस तरह एक कारोबारी दिन में निवेशकों की कुल संपत्ति में 3,33,421.01 करोड़ रुपये का इजाफा हुआ। बाजार के इस रुख से स्पष्ट हुआ कि सेंसेक्स और निफ्टी में सीमित गिरावट के बावजूद कई क्षेत्रों और विशेषकर छोटी तथा मझोली कंपनियों के शेयरों में निवेशकों की दिवचस्पी बनी रही। व्यापक बाजार में खरीदारी का असर कंपनियों के कुल बाजार मूल्यंकन में हुई

बाद पुलिस ने उत्तर प्रदेश की रुखसार, बरेली निवासी एजाज अहमद और बदयूं निवासी मोहम्मद अजहर को पकड़ा। इन आरोपियों से पूछताछ के दौरान सामने आए तथ्यों के आधार पर जांच आगे बढ़ी और कथित नेटवर्क के तार लखनऊ से होते हुए झारखंड के चतरा तक पहुंचे। जांच में मिली जानकारी के बाद पुलिस ने चतरा में दक्खि दी। कार्रवाई के दौरान 8.128 किलोग्राम हेरोइन, 12.81 लाख रुपये नकद, तीन एसयूवी और एक रॉयल एनफील्ड मोटरसाइकिल बरामद की गई। पुलिस इन बरामद वस्तुओं के स्रोत, इस्तेमाल और कथित तस्करी नेटवर्क से उनके संबंधों की जांच कर रही है। बरामद नकदी नशीले पदार्थों की बिक्री से जुड़ी है या किसी अन्य गतिविधि से संबंधित है, इसकी पुष्टि भी जांच के आधार पर की जाएगी। इसी तरह वाहनों की भूमिका और उनके माध्यम से कथित रूप से की गई दुलाई की जानकारी जुटाई जा रही है। पुलिस के सामने अब इस नेटवर्क से जुड़े सभी लोगों की भूमिका स्पष्ट करने, अफीम की खेती वाले क्षेत्रों की पहचान करने और

कच्चे माल से लेकर तैयार हेरोइन की आपूर्ति तक की पूरी शृंखला का पता लगाने की चुनौती है। जांच एजेंसियां यह भी पता लगाने का प्रयास कर रही हैं कि कथित तस्करी से अर्जित धन कहा-कहां भेजा जाता था और क्या इस कारोबार से जुड़े अन्य लोग भी सक्रिय हैं। अलग-अलग राय्यों में फैले संपर्कों की वजह से जांच में कई स्थानों पर जानकारी जुटाने और साक्ष्यों का मिलान करने की जरूरत पड़ रही है।

इस कार्रवाई ने झारखंड, उत्तर प्रदेश और दिल्ली-एनसीआर के बीच कथित नशा तस्करी के अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क की ओर ध्यान खींचा है। पुलिस का दावा है कि आरोपियों की गिरफ्तारी और बरामदगी से नेटवर्क की कई अहम कड़ियों का पता चला है। हालांकि, कथित तस्करी, नक्सली संपर्कों और अलग-अलग स्थानों पर सप्लाई से जुड़े आरोपों की अंतिम पुष्टि जांच और न्यायिक प्रक्रिया के दौरान ही होगी। फिलहाल दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल नेटवर्क के अन्य संभावित सदस्यों, नशीले पदार्थों की आपूर्ति के स्रोत और इससे जुड़े आर्थिक लेनदेन की पड़ताल में जुटी है।

## भावनगर मंडल के खीजडीया—अमरेली आमान परिवर्तन परियोजना का संरक्षा निरीक्षण संपन्न,नवनिर्मित ब्रॉडगेज लाइन पर 120 किमी प्रति घंटे की गति से सफल स्पीड ट्रायल

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में खीजडीया—अमरेली आमान परिवर्तन (गेज कन्वर्जन) परियोजना के अंतर्गत नवनिर्मित ब्रॉडगेज रेल लाइन का रेलवे संरक्षा आयुक्त (CRS) द्वारा 27 अक्टूबर, 2026 को संरक्षा निरीक्षण किया गया।

इस परियोजना के अंतर्गत खीजडीया—अमरेली सेक्शन में 16.761 किलोमीटर लंबी मीटरगेज रेल लाइन को ब्रॉडगेज में परिवर्तित करने का कार्य पूरा कर लिया गया है। रेलवे संरक्षा आयुक्त द्वारा रेल ट्रैक, सिग्नलिंग प्रणाली एवं अन्य तकनीकी कार्यों का विस्तृत निरीक्षण किया गया।

रेल संरक्षा आयुक्त, पश्चिम परिमंडल, मुंबई, श्री डी. श्रीनिवास ने 27 अक्टूबर, 2026 को खीजडीया से अमरेली तक नवनिर्मित रेल लाइन का मोटर ट्रॉली से गहन निरीक्षण किया। इसके पश्चात अमरेली से खीजडीया के बीच 120



किमी प्रति घंटे की गति से स्पीड ट्रायल किया गया।

इस अवसर पर मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण (CAO/C) श्री प्रदीप कुमार, भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधकों श्री दिनेश वर्मा सहित रेलवे के अन्य वरिष्ठ अधिकारी एवं निर्माण शाखा के अधिकारी भी उपस्थित रहे। खीजडीया—अमरेली सेक्शन में आमान

परिवर्तन कार्य पूर्ण होने तथा संरक्षा निरीक्षण एवं स्पीड ट्रायल संपन्न होने से इस रेलखंड पर यात्री रेल सेवाएं शुरू करने की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। आवश्यक स्वीकृतियां प्राप्त होने के बाद रेल सेवाओं का परिचालन शुरू होने से क्षेत्र के यात्रियों को बेहतर रेल कनेक्टिविटी मिलेगी तथा आवागमन अधिक सुविधाजनक होगा।

### 20 रुपये की कचौड़ी खाने रुका युवक, स्कूटी से 20 लाख का बैग लेकर फरार हुए बदमाश

जयपुर। राजस्थान की राजधानी जयपुर में महज 20 रुपये की कचौड़ी खाने के लिए रुकना एक युवक को करीब 20 लाख रुपये का नुकसान दे गया। सड़क किनारे स्कूटी पर बैठकर कचौड़ी खा रहे युवक की स्कूटी के पायदान पर रखा नकदी से भरा बैग दो बदमाश उठाकर फरार हो गए। युवक जब तक कुछ समझ पाता और उन्हें रोकने की कोशिश करता, तब तक आरोपी मौके से निकल चुके थे। दिनदहाड़े हुई इस वारदात से इलाके में हड़कंप मच गया। घटना सोमवार रात करीब चार बजे नाहरगढ़ थाना क्षेत्र में हुई। पीड़ित की शिकायत पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और आरोपियों की तलाश में जुट गई है।

जानकारी के अनुसार, सिरोही निवासी चंपालाल माणक (50) जयपुर में एक कपड़ा व्यापारी के यहां कलेक्शन का काम करता है। उसकी जिम्मेदारी शहर के चौक क्षेत्र से लेकर नाहरगढ़ थाना इलाके तक विभिन्न व्यापारियों से रुपये एकत्र करने की है। सोमवार को भी वह रोजाना की तरह कलेक्शन के काम से निकला था। व्यापारियों से रकम एकत्र करने के दौरान उसके पास बड़ी मात्रा में नकदी जमा हो गई थी। इसी रकम को लेकर वह अपने काम में लगा हुआ था। बताया जा रहा है कि उसके बैग में करीब 20 लाख रुपये रखे हुए थे।

इसी दौरान चंपालाल रास्ते में कचौड़ी खाने के लिए रुक गया। उसने अपनी